

# किशोरों में बढ़ती हिंसात्मक प्रवृत्ति – कारण एवं निदान

अनूपी समैया\*

किशोरावस्था बाल्यावस्था के बाद आती है। मनोवैज्ञानिकों ने इस काल को तूफान एवं परेशानी का काल कहा है। किशोरावस्था में आत्मसम्मान, आत्मस्वीकृति, सुरक्षा, स्वतंत्रता, सुख एवं आनंद की चाहत, आत्मनिर्भर बनने की चाहत, बिछुड़ने का भय या स्नेह की लालसा, कल्पना की बहुलता, वीर-पूजा, भावनात्मक असुरक्षा, प्रतिस्पर्धा, मीडिया का प्रभाव, माता-पिता की अपेक्षाएँ, विद्रोह की भावना, विशेष रुचियाँ तथा यौन विकास तथा नैतिक मूल्यों में बँधे रहने की समस्या रहती है। ऐसे समय में माता-पिता का कठोर अनुशासन, स्कूल का वातावरण, मित्रता आदि उसे एक साथ निभानी पड़ती हैं, ऐसी स्थिति में किसी समय विशेष में जो भावना अधिक प्रबल हो जाती है किशोर उसी तरफ मुड़ जाता है। अध्यापकों द्वारा दिखाई गई उदासीनता अथवा शारीरिक दंड, दोनों ही बालक पर गहरा असर डालते हैं। बचपन में जिस मारपीट एवं फटकार को बच्चा सह जाता है उसी पर किशोरावस्था में भिन्न प्रतिक्रियाएँ दर्शाता है। माता-पिता का आपसी तनाव, आर्थिक-सामाजिक व्यस्तता, बच्चे के प्रति असहिष्णुता एवं संवादहीनता किशोरों में रोष उत्पन्न करती है। साथ ही अभी तक सुर्खियों में चोरी, हड़ताल, दहेज हत्याएँ, राजनीतिक षड्यंत्र और भ्रष्टाचार की खबरें ज्यादा होती थीं। परंतु कुछ दिनों से खबरों की इन सूची में किशोरों द्वारा की जाने वाली आत्महत्याओं एवं हत्या जैसे जघन्य अपराधों को अंजाम दी जाने वाली खबरें आ रही हैं। अतः किशोरों को हर प्रकार के तनाव से बचाने के लिए माता-पिता, शिक्षकों एवं समाज का यह कर्तव्य है कि वे किशोर को ठीक से समझकर उसके व्यक्तित्व का सम्मान करें क्योंकि इस उम्र में किशोरों को विशेष भावनात्मक सहयोग, स्नेह एवं भरोसे की आवश्यकता होती है, तभी वे अपना आत्मविश्वास बनाए रख पाते हैं तथा किशोरों को भी स्वमूल्यांकन करना होगा। उन्हें यह बात समझनी होगी कि उनके इस प्रकार के कृत से उनको और उनके परिवार को किस प्रकार परिणाम भुगतने होंगे।

किशोर अवस्था उम्र का सबसे नाजुक दौर है, इस परिवर्तनों के कारण, वे अपने आपको उलझा हुआ उम्र में शरीर के साथ-साथ मस्तिष्क में हो रहे एवं असुरक्षित महसूस करते हैं। बच्चों का टीनएज

\* प्राचार्य, बी.टी. इंस्टीट्यूट ऑफ़ एक्सीलेंस, मकरोनिया, सागर (म.प्र.)

में आना माता-पिता एवं शिक्षकों के लिए एक साथ कई मुश्किलें खड़ी करता है। इस उम्र में किशोर अपनी रचनात्मकता के शीर्ष पर होते हैं, लेकिन अगर चूक हो जाए तो विध्वंसक होने में भी देर नहीं लगती। इस उम्र में वे अतिसंवेदनशील होने के कारण नशीले पदार्थों का सेवन करने लगते हैं तथा इसका असर जल्दी होता है।

अभी तक सुर्खियों में रहने वाली खबरों में चोरी, अगवानी, हड़ताल, राजनीतिक षड्यंत्र और भ्रष्टाचार की खबरें ही ज्यादा होती थीं। कुछ दिनों से खबरों की इन सूची में बाल हिंसा की खबरें जुड़ गई हैं, क्योंकि अब छोटे-छोटे बच्चों द्वारा भी हत्या जैसे जघन्य अपराधों को अंजाम दिया जाने लगा है। कुछ समय पूर्व गुड़गाँव, हरियाणा के एक नामी स्कूल में दो छात्रों के बीच झगड़ा इतना बढ़ा कि एक ने दूसरे की गोली मारकर हत्या कर दी। एक अन्य स्कूल के दो लड़कों के बीच हुई लड़ाई में एक ने दूसरे के पैर में चाकू से इतने वार किए कि वह मर गया।<sup>1</sup> सवाल यह है कि आखिर पेन-पेंसिल और बॉल पकड़ने वाले हाथों में पिस्तौल, चाकू और हथियार क्यों? हिंसात्मक प्रवृत्ति बच्चे खुद लेकर नहीं जन्मते। वैश्वीकरण के बाद बदले परिवार के स्वरूप, कामकाजी माँओं की संख्या में वृद्धि और माता-पिता का दफ्तर में ज्यादा समय बिताने के कारण अपने बच्चों को पर्याप्त समय न दे पाने के अपराधबोध को कम करने के लिए, वे भौतिक सुविधाओं द्वारा पूरा करने का प्रयास करते हैं। पढ़ाई व अनुशासन के नाम पर बात-बेबात घर या स्कूल में मिलने वाली मार एवं दबाव कई बार व्यावहारिक दोष उत्पन्न कर देते हैं। यह मार शरीर के साथ-साथ दिलो-दिमाग पर गहराई से असर करती है। जिससे

बच्चे में दूसरों को नुकसान पहुँचाने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। उसके मन में हर छोटी-बड़ी बात के प्रति एकदम से ताव आ जाता है और फिर जन्म लेती है बदले की भावना। हर तरह की हिंसा के पीछे कड़वे अनुभवों का हाथ होता है।<sup>2</sup>

### किशोरों में बढ़ती हिंसात्मक प्रवृत्ति के कारण

**घरेलू माहौल**—संयुक्त परिवारों के कम होने और एकल परिवारों के बढ़ने का सबसे बुरा प्रभाव किशोरों पर ही पड़ा है। अधिकतर माता-पिता कामकाजी हैं। सुख-सुविधाएँ बढ़ी हैं, लेकिन समय की कमी है। दादा-दादी के पास बैठकर शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनने की बातें खुद ही किस्सा बन गई हैं। मोबाइल-टीवी के शोर में संवाद की गुंजाइश और कम होती जा रही है। बच्चे खुल कर माता-पिता या बड़े बहन-भाइयों को अपनी समस्याएँ नहीं बता पाते, अकेले ही उससे जूझते रहते हैं। समाधान न मिलने पर अपनी खीज और गुस्से को दूसरों से मारधाड़ या तोड़-फोड़ के रूप में प्रकट करते हैं तथा अपनी-अनुचित माँगें पूरी करने लगते हैं, जो गलत है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि सभी सुख-सुविधाएँ आसानी से मिल जाने के कारण भी उनकी सहनशक्ति और संघर्ष क्षमता कम होती जा रही है।<sup>3</sup>

**दबाव झेलते किशोर**—माता-पिता की अपेक्षाएँ बच्चों से बहुत बढ़ गई हैं। कई बार उन्हें पूरा न कर पाने का दबाव, मित्रों से प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या, दोस्तों से झगड़ा या उनसे न मिल पाने जैसे कई दबाव उन्हें झेलने पड़ते हैं। आज किशोरों पर सबसे बड़ा दबाव है आधुनिक और पाश्चात्य जीवनशैली के साथ परंपरागत पारिवारिक मूल्यों

का तालमेल बैठाना। अजीब से संक्रमण काल से गुजर रहे हैं टीनएजर्स। उनकी समस्याएँ सुलझाना तो दूर, आजकल माता-मिता के पास धैर्यपूर्वक उन्हें सुनने तक की फुर्सत नहीं है।<sup>4</sup>

**स्कूलों में बढ़ता व्यावसायीकरण**—कभी गुरु-शिष्य का संबंध एक मिसाल हुआ करता था। समय के साथ स्थितियाँ उलट गईं। स्कूल व्यावसायिक केंद्रों में तब्दील हो गए हैं। बच्चों में नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने का कर्तव्य अब शिक्षकों का नहीं रहा। अध्यापकों का रूखा व्यवहार और छोटी-छोटी गलतियों पर कड़ी सजा देना किशोर छात्रों को क्रोधी बना देता है। इन हिंसक प्रवृत्तियों को सुधारने की दिशा में कोई सार्थक प्रयास भी नहीं हो रहा।<sup>5</sup>

**टीवी का प्रभाव**—बरिष्ठ सलाहकार, डॉ. जितेंद्र नागपाल (बाल मनोविज्ञान, दिल्ली) के अनुसार पिछले दो दशकों में किशोर उम्र के लड़के-लड़कियों पर हुए अध्ययन बताते हैं कि टीवी पर आने वाले हिंसक कार्यक्रमों का उन पर घातक असर पड़ता है।<sup>6</sup>

1. कार्यक्रमों में स्त्री को हमेशा निरीह भुक्तभोगी के बतौर दिखाया जाता है। लड़कियों के मन में भय पैदा होता है। उन्हें लगता है कि उनके इर्द-गिर्द का समाज बहुत दूषित है। उनके मन में समाज की नकारात्मक छवि रच-बस जाती है।
2. कार्टूस भी किशोरों को हिंसक बना रहे हैं। एक ओर जहाँ उनकी भाषा-शैली गलत प्रभाव डाल रही है, वहीं दूसरी ओर स्टंट दिखाने वाले कई धारावाहिक और उनके

करामाती चरित्र बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। उन्हें लगता है कि वे भी इतने ही बलशाली और ताकतवर हो सकते हैं।

3. अध्ययनों के अनुसार, मीडिया में जिस तरह रक्तरंजित और सनसनीखेज खबरों का दौर चल निकला है, उसका टीनएजर्स पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। वे समय से पूर्व परिपक्व हो रहे हैं। उन्हें बड़ी से बड़ी घटना भी महज एक खबर लगती है। टीवी उनकी संवेदनशीलता खत्म कर रहा है।
4. अकेले टीवी देखना ज्यादा हानिकारक है। बड़े होते बच्चे अपनी सहज बुद्धि के अनुसार दृश्यों का अर्थ निकालते हैं। माता-पिता साथ बैठकर टीवी देखें, उन्हें चीजों का मर्म समझाएँ तो किशोरों के मन में सही संदेश जा सकता है।

बच्चे के कोमल मस्तिष्क पर हिंसात्मक कार्यक्रमों का नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। वेन्दुरा नामक मनोवैज्ञानिक ने कहा है कि “हिंसा देखकर हिंसक व्यवहार जन्म लेता है” निश्चय ही, कार्यक्रमों में हिंसा देखकर बच्चों का मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है, वे उनकी मानसिकता को निश्चित रूप से गलत दिशा की ओर ले जाते हैं। कई जघन्य अपराध करने वाले किशोरों ने यह स्वीकार किया है कि अपराध कराने की प्रेरणा उन्होंने टीवी के धारावाहिकों को देखकर प्राप्त की।<sup>7</sup>

**विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण**—विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण स्वाभाविक है और किशोर इससे सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। लड़के-लड़कियों का मेलजोल अगर सही ढंग से हो तो यह उनके व्यक्तित्व के विकास में सहायक हो सकता है।

हालाँकि इसमें भटकने की आशंकाएँ भी कम नहीं होतीं। इसमें मामूली भटकाव ज़िंदगी भर पछताने का कारण बन सकता है।

**पियर प्रेशर**— हमउम्र सहपाठी, साथी या समूह द्वारा व्यवहार, नज़रिए, और मूल्यों को बदलने का दबाव। यह हर उम्र के लोगों पर होता है, लेकिन टीनएज में यह दबाव सर्वाधिक होता है। कई बार टीनएजर्स खुद को दोस्तों की जमात में फिट नहीं पाते और अकेलेपन से ग्रस्त होने लगते हैं। कभी हीनता तो, कभी श्रेष्ठता भावना के चलते वे दोस्तों के साथ मिक्स-अप नहीं हो पाते। किशोरावस्था में उनके साथी उनके रोल मॉडल होते हैं। गूलत कार्यों की ओर प्रेरित दोस्तों के दबाव में इनमें क्लास छोड़ना, ड्रग्स या सिगरेट की लत पड़ना, ईव टीजिंग, ग्रुप बनाकर टीचर्स या अन्य सहपाठियों को डराना-धमकाना जैसी तमाम बुरी आदतें उन्हें घेरने लगती हैं। ज़ाहिर है, ऐसा वे सीनियर साथियों से प्रभावित होकर करते हैं। शोध बताते हैं कि ऐसे बच्चे भी दोस्तों के प्रभाव में जल्दी आते हैं, जिन्हें घर में कम सपोर्ट मिलता है। घर में प्यार न मिलने पर बच्चे उसे बाहर तलाशने लगते हैं, उनकी भावनात्मक असुरक्षा का फ़ायदा चालाक छात्र उठा लेते हैं।<sup>8</sup>

### किशोरों में हिंसात्मक प्रवृत्ति रोकने के उपाय

**अभिभावकों की भूमिका**— किशोरों का मार्गदर्शन करना अभिभावकों का दायित्व है। बच्चे कभी भी उन मूल्यों को नहीं छोड़ेंगे, जो बचपन से उन्हें दिए गए हैं। मूल्यों के विकसित होने पर चरित्र का निर्माण आसानी से हो जाता है। अतः किशोरावस्था में माता-पिता को इन तथ्यों को ज़रूर ध्यान में रखना चाहिए<sup>9</sup>—

1. आमतौर पर किशोरों के लिए शारीरिक बदलावों को समझ पाना मुश्किल होता है। वे चिड़चिड़े हो जाते हैं, साथ ही साथियों के साथ अपने बदलावों की तुलना करके वे और भी चिंतित हो जाते हैं। उन्हें समझाएँ कि इसमें असामान्य कुछ भी नहीं। उन्हें अपने अनुभव सुनाएँ। उनके शारीरिक बदलावों, खासतौर पर वजन बढ़ने-घटने को लेकर उन्हें ताने न दें।
2. अगर बढ़ते बच्चे ज़्यादा प्रतिक्रियावादी हो जाएँ, हर बात पर जवाब देने लगे तो बजाय उन्हें सज़ा देने के, उनकी बातों को ध्यान से सुनें और उनके स्तर पर जाकर उनके तर्कों को समझने की कोशिश करें। किशोरों के व्यवहार में किसी अप्रत्याशित बदलाव को नज़रअंदाज़ न करें। उनके दोस्तों के बारे में अवश्य जानकारी हासिल करें और टीचर्स से मिलें। यदि आपको लगता है कि वे नियंत्रण से बाहर हो रहे हैं, दोस्तों के साथ ज़्यादा वक्त बिता रहे हैं तो उनके मित्रों और उनके माता-पिता को घर पर आमंत्रित करें। यदि वे नकारात्मक प्रवृत्ति वाले नज़र आते हैं तो अपने बच्चों को इस बारे में सचेत करें। हमउम्र दोस्तों की तरह व्यवहार करें। ज़रूरत पड़े तो मनोवैज्ञानिक की राय भी लें।
3. छोटी-छोटी बातों को नज़रअंदाज़ करना सीखें। उनकी ड्रेसेज़, हेल्थर स्टाइल्स पर कमेंट करने के बजाय यह ध्यान दें कि उनका सर्किल कैसा है। दोस्त गलत दिशा में तो नहीं ले जा रहे? यानी छोटे बदलावों के बजाय जो बड़े प्रश्न हैं, उन्हें सुलझाने की कोशिश करें। उन्हें ज़िम्मेदारियाँ सौंपें। अपने छोटे-छोटे निर्णय

- खुद लेने को प्रोत्साहित करें, ताकि वे अपनी योग्यता साबित कर सकें।
4. बच्चों को 'न' कहना सिखाएँ। यदि उनका कोई दोस्त जबरन ऐसा कार्य करवाना चाहता है, जिसे वे नहीं करना चाहते तो अच्छा होगा कि वे उदारतापूर्वक 'न' कह दें। यदि सीधा बोलने में उन्हें हिचक हो तो 'नहीं, धन्यवाद' 'मुझे जाना चाहिए...' जैसे वाक्य बोल सकते हैं। बच्चों को सिखाएँ कि साथियों या सीनियर लड़कों के गलत दबाव से कैसे बचें।
  5. उनसे कोई गलती हो जाए, तो सज़ा देने के बजाय उन्हें समझाएँ और बताएँ कि किस तरह के साथियों से वे दूर रहें। उन्हें सिर्फ़ यह न बताएँ कि यह कार्य गलत है, बल्कि वह कार्य क्यों गलत है, यह भी जरूर बताएँ। तभी वह सकारात्मक ढंग से सोच सकेंगे।
  6. सालवान स्कूल, दिल्ली की काउंसलर डॉ. ज्योति के अनुसार बड़े होते बच्चों को क्वालिटी टाइम दें। उनकी बातें गंभीरता से सुनें। घर में ऐसा माहौल बनाएँ कि वे खुलकर अपनी बात कह सकें। अनुशासन, संस्कार से सफलता का रास्ता बताने के लिए परिजनों को उन्हें समय देना होगा तभी वे अपने बच्चों को वैचारिक धरातल दे सकते हैं।
  7. उनकी रचनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा दें। पुस्तकें पढ़ने, संगीत सुनने, कलात्मक गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें। क्रिकेट, फुटबाल, बैडमिंटन, हॉकी जैसे खेलों में उनकी भागीदारी बढ़ाएँ।
  8. माता-पिता बच्चों के रोल मॉडल होते हैं। उनके सामने आपसी व्यवहार व आचरण शिष्ट रखें, आपस में लड़ें-झगड़ें नहीं। किशोरावस्था में माता-पिता उनको शरीर एवं मस्तिष्क में हो रहे परिवर्तनों के तथ्यों से अवगत करायें, ताकि उनकी सोच सकारात्मक एवं दूरगामी बन सके। उन्हें माता-पिता का प्यार एवं मार्गदर्शन मिलने पर उनमें आत्मविश्वास बढ़ेगा। हारना भी जीवन का अंग है, बच्चे के असफल होने पर डाँटकर मायूस न करें, बल्कि हार से सबक लेकर जीतने की भावना का विकास करें। इसके लिए माता-पिता को सहनशीलता और धैर्य रखना होगा। साथ ही बच्चे का मनोबल व धीरज बढ़ाएँ।
  9. बच्चों के नज़रिये से अपने आस-पास के वातावरण को देखें। बिना वजह उनकी बात को काटें नहीं अर्थात् उनके दृष्टिकोण को भी महत्त्व दें। अपने अहम के चलते बच्चों को हथियार के बतौर न इस्तेमाल करें। उसके मन में भी आपके प्रति प्रेम और विश्वास पैदा होगा, आपसी समझ बढ़ने से संवादहीनता और दूरियाँ खत्म होंगी, आपका विश्वास ही उसे समर्थ बनायेगा, जिनसे समस्याओं के लिए कोई जगह नहीं होगी।<sup>10</sup>
  10. आज अधिकतर घरों में, खासकर उच्च या मध्यम वर्ग के घरों में बच्चे किसी भी घरेलू कार्य में हाथ नहीं बँटाते हैं, उनकी दुनिया कंप्यूटर, प्ले स्टेशन, वीडियो गेम, टीवी, मोबाइल जैसे मँहगे उपकरणों के इर्द-गिर्द सिमटकर रह गई है। यदि उनको घर-परिवार के सार्थक कार्यों में लगाया जाय व उनको अपना काम स्वयं करने की प्रेरणा व अवसर प्रदान करें एवं सही कार्य करने पर उन्हें शाबासी देने से उनमें उत्तरदायित्व का बोध जागेगा, साथ ही कार्य करने का हौसला भी

- बढ़ेगा और वे घर-परिवार से बेहतर रूप से जुड़ेंगे।<sup>11</sup>
11. घोर प्रतियोगिता के इस ज़माने में हर कोई अपने बच्चों को जल्द से जल्द अनुशासित एवं परिपक्व बनाना चाहता है परंतु उनकी यह प्रवृत्ति बच्चों पर शारीरिक एवं मानसिक दबाव डालती है, जो उनके व्यक्तित्व के विकास को कुंठित कर देती है। और बालक को सहज जीवन नहीं जीने देती। माता-पिता अपना तनाव व महत्वाकांक्षाएँ बच्चों पर थोपना चाहते हैं। हर बच्चे का अपना अलग व्यक्तित्व होता है इसलिए उसे अपनी पसंद-नापसंद, महत्वाकांक्षा की पूर्ति का साधन न बनायें। अभिभावक बच्चों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दें, उनकी समस्या समझें व उनसे अच्छा व्यवहार करें, पक्षपात न करें।<sup>12</sup>
12. बालमन पर दबाव बनाने के लिए हथेलियों को कठोर करना कहाँ ज़रूरी है? उसके लिए तो ज़रूरी है अपने हाथों में उसका चेहरा समेटकर दी जानी वाली समझाइश। हाथ से हाथ पकड़कर बाँधा गया विश्वास का एक रिश्ता, जहाँ कभी बच्चा आँखों में चमक लेकर अपनी सफलता बता सके या सिर झुकाकर अपनी गलती स्वीकार कर सकें, यह ज़रूरी है।<sup>13</sup>
13. बढ़ती उम्र में ऊर्जा अधिक होती है, जो टीवी देखने में इस्तेमाल नहीं होती है। ज़रूरी है कि बच्चों को रोज़ कोई खेल खेलने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशानिर्देशों के अनुसार हर रोज़ एक घंटा साधारण शारीरिक व्यायाम

करना चाहिए, इसके अलावा हड्डियों और मांसपेशियों को मजबूत करने और शरीर को लचीला बनाने के लिए हफ्ते में कम से कम दो बार व्यायाम करना चाहिए।<sup>14</sup>

**अध्यापकों की भूमिका-** शिक्षक सामाजिक एवं नैतिक दृष्टि से बालकों के साथ उचित व्यवहार करें, विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग करके पाठ को प्रस्तुत करें, बालकों को कोई बात समझ में न आने पर उन्हें दोबारा रुचिपूर्वक समझायें, खीझें नहीं व डाँटें नहीं और न ही कक्षा में अपमान करें। बच्चों के व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास करें। विषय को आसान तरीके से समझायें, तथा उन्हें उचित आचरण की शिक्षा दें, कक्षा के कमजोर बच्चों पर विशेष ध्यान दें। विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए सभी बच्चों को समान अवसर प्रदान करें। बच्चों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दें, उनकी व्यक्तिगत समस्याओं को समझें व उनसे अच्छा व्यवहार करें, पक्षपात न करें। बालक को विश्वास में लेकर उनकी समस्या को गोपनीय रूप से सुलझाने में सहायता करें व बच्चे की सामाजिक हित में अपेक्षित संस्कारों का बीजारोपण करें।

**युवा शक्ति का आह्वान-** संवेदना और साहस की सघनता में युवा शक्ति प्रज्ज्वलित होती है। जहाँ भाव छलकते हों और साहस मचलता हो, समझिए कि वहीं यौवन की चिंगारी शक्ति की धधकती ज्वालाओं में बदलने को व्याकुल है। हारे हुए मन और थके हुए शरीर से कोई भी युवा नहीं है, इसलिए युवाओं को अपना लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। लक्ष्य के बिना युवा शक्ति बर्बाद होती रहेगी। ओछे आकर्षण, इन्द्रधनुषी स्वप्न की कोई उम्र नहीं होती, परंतु ये स्वप्न हैं कौन

से? तात्कालिक स्वप्न जो बुलबुलों के समान बनते और बिगड़ते हैं, हकीकत में ये जीवन का अमरकोष नहीं हैं। अतः युवाओं को अपनी संकल्पशक्ति ग्रहण करते हुए सार्थक मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए। संबंधों को लेकर हम जो भी निर्णय लेते हैं वे दिल से ज्यादा व दिमाग से कम होते हैं। इससे दोनों में से किसी को भी फ़ायदा नहीं होता। कोशिश करें कि दिल के साथ दिमाग की भी सुनें। यह ज़रूरी है कि आप अपने पेरेंट्स को अपने कार्यकलापों से अवगत कराते रहें। पता होने पर आपको गलत राह पर जाने से बचाया जा सकेगा। पेरेंट्स से बातचीत करने व सही तरीके से कम्युनिकेट करने में आपको सही दिशा निर्देश व बेहतर सलाह मिल पाएगी।<sup>15</sup>

युवाओं द्वारा किये जाने वाले हिंसात्मक कार्यों एवं मौतों के बावजूद सरकार की भूमिका सकारात्मक नहीं है। सरकार को चाहिए कि वह अपना व्यावसायिक दृष्टिकोण त्यागकर धर्म, दर्शन, संस्कृति जैसे क्षेत्रों में अधिक निवेश करे। बच्चों को गुमराह करने वाले तथा उनके व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव डालने वाले साहित्य एवं

दूरदर्शन के कार्यक्रमों पर तत्काल प्रतिबंध इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। अतः राज्य, समाज, विद्यालय और परिवार सभी को एक साथ मिलकर कार्य करना चाहिए।

निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि व्यक्ति, समाज, देश और अन्ततः पूरे विश्व को उन्नत करने के लिए बालकों में नैतिकता या चारित्रिक दृढ़ता का होना अत्यंत आवश्यक है। बालक के अपराधी, कुसंस्कारी एवं निकम्मा बनने में मुख्यतः माता-पिता और शिक्षक ही दोषी हैं क्योंकि परिवार एवं विद्यालय में उनकी इस स्थिति में मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम के दायरे में ही सीमित नहीं रखना होगा, वरन् इसे नयी भूमिका व संदर्भ में देखना होगा व इसका प्रयोग ज्ञानात्मक स्तर तक सीमित न रखकर भावनात्मक एवं क्रियात्मक स्तर तक करना होगा। परिवार एवं विद्यालय दोनों की प्रथम अनिवार्यता है कि वह चरित्र व सदाचार की शिक्षा को ही अपना लक्ष्य समझें ताकि बालक के व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ राष्ट्र का नैतिक व आध्यात्मिक उत्थान हो सके।

### संदर्भ

1. माहेश्वरी, वैद्यराज और कुमार, रमेश. (संपादक). 2008. 'आयुष्मान'. बसंत ऋतु अंक. पृ. 71
2. चावला, प्रभु. (संपादक). 2009. *इंडिया टुडे*. वर्ष:23, अंक:52, 4 नवंबर, पृ. 17
3. तदैव
4. नरगुंदे, विभा. "किशोर होते बच्चे ज़रूरी है आपका विश्वास". *नवदुनिया (नायिका)*. भोपाल. बुधवार 9, दिसंबर 2009, पृ.6
5. पाठक, पी.डी. 1975. *शिक्षा मनोविज्ञान*. छठवाँ संस्करण. विनोद पुस्तक मंदिर. आगरा, पृ.6
6. राज एक्सप्रेस, 4 दिसम्बर 2010, पृ.8
7. राज एक्सप्रेस. 28 जनवरी 2008, सोमवार
8. राठौर, इंदिरा, गुप्ता, प्रगति. संपादक). 'उम्र के नाजुक दौर पर', *जागरण सखी*, वर्ष:8, अंक:5, जुलाई 2008, पृ. 52-53

9. तद्वैव
10. दैनिक भास्कर, सागर, शुक्रवार, 22 जनवरी 2010, पृ.12
11. दुबे, देवदत्त (संपादक). सार्थक संवाद, वर्ष:4, अंक:9, दिसंबर 2002, पृ. 49
12. अरोरा, सलोनीय. दैनिक भास्कर. (मधुरिमा), 'मार की गहरी छाप'. बुधवार, 16 दिसंबर 2009
13. पहवा, वेद प्रकाश (संपादक). मेरी सहेली. जनवरी. 2008, पृ.130
14. सामंतरेय, जयश्री. इनकल्लेखन ऑफ वेल्थूज थ्रू एजुकेशन. एड्यूट्रेक्ट्स, वॉल-7, न. 12, अगस्त 2008
15. कुरुविल्ला, मौलि. द डूज एंड डोन्ट्स फॉर इफैक्टिव पैरेंटिंग विद् एडोल्सेन्ट्स. एड्यूट्रेक्ट्स. वॉल-7, न. 12, अगस्त 2008, पृ. 16-18